भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

25 अक्तूबर, 2014

हर्राकोडेर फर्जी मुठभेड़ के विरोध में

19 सितंबर,2014 को बस्तर जिले के लोहाण्डिगुडा ब्लॉक के हर्राकोडेर जंगल में मुठभेड़ होने व दो माओवादियों के मारे जाने का जो दावा पुलिस ने किया था, वह सरासर झूठ है। दरअसल उस दिन मुखबिर की सूचना पाकर सुबह 7 बजे के आसपास में पुलिस ने हमारी पीएलजीए की एक टीम के डेरे पर हमला किया था। इस हमले का माकूल जवाब देते हए हमारे छापामार सुरक्षित पीछे हट गये थे। इस घटना में एक जवान मारा गया था। उसके बाद पुलिस ने हर्राकोडेर पंचायत के आश्रित गांव तमसकोदरा के रामदेर ईकुल नामक लेस्के {लेस्के यानी पूजारी, हल्बी भाषा में सिरहा जो मंत्र–तंत्र एवं जड़ी–बूटियों के द्वारा ग्रामीणों का इलाज करते हैं} जिसे रास्ता दिखाने के नाम पर पुलिस घर से उठा ले गयी थी, सहित एक और अज्ञात व्यक्ति की फर्जी मुठभेड़ में हत्या की और माओवादियों को मार गिराने का झूठा दावा मीडिया के सामने पेश किया। परिवारजन सहित पूरे पंचायत के ग्रामीण जगदलपूर जाकर मृतक रामदेर की लाश लेकर आ रहे थे कि बारसूर पुलिस ने रास्ते में ही परिवारजनों को रोककर लाश को गांव तक नहीं ले जाने दिया और लाश को सातधार पुलिया के आगे दफनाने पर मजबूर किया था। एक ओर झूठी मुठभेड़ और दूसरी ओर अपने रीति–रिवाज से अंतिम संस्कार नहीं करने देने से इलाके के ग्रामीणों में रोष व्याप्त है।

इस फर्जी मुठभेड़ में मारे गये दूसरे व्यक्ति के पोस्ट मार्टम रिपोर्ट का हवाला देते हुए आईजी कल्लूरी ने यह दावा किया कि मारा गया दूसरा व्यक्ति मुस्लिम था और उसकी पहचान के लिए डीएनए रिपोर्ट कश्मीर, मुम्बई समेत देश के कई अन्य इलाकों में भेजी गयी है। दरअसल केंद्र व राज्य सरकार के इशारे पर रची गयी साजिश के तहत कल्लूरी ने यह दावा किया। कश्मीरी या मुस्लिम मिलिटेंटों एवं पाकिस्तानी गुप्तचर संस्था आईएसआई के साथ माओवादियों के संबंध होने का झूठा प्रचार करना एवं माओवादियों को देश विरोधी के रूप में बदनाम करना इस साजिश का एक हिस्सा है जबकि दूसरा हिस्सा है, सरकारों की मुस्लिम अल्पसंख्यक विरोधी नीतियों का विरोध करने वाले छत्तीसगढ़ के मुस्लिम युवाओ का माओवादियों के साथ रिश्ते के नाम पर कत्ल व दमन करना। पुलिस में मौजूद हमारे सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कथित मुस्लिम व्यक्ति को पुलिस स्वयं साथ में लेकर जंगल में घुसी थी। बारसूर इलाके के लोगों में यह स्पष्ठ व खुली चर्चा है कि दाढ़ी वाले मुस्लिम व्यक्ति को पुलिस अपने साथ लेकर ऑपरेशन के लिए अंदर घुसी थी। फर्जी मुठभेड़ में मारा गया मुस्लिम व्यक्ति कौन है, यह जांच का विषय है। इस्लामिक आतंकवादियों के नाम पर देश भर के मुस्लिम युवाओं को गिरफतार करना, फर्जी केसों में जेलों में सड़ाना एवं झूठी मुठभेड़ों में हत्या करना पिछले कुछ सालों से लगातार जारी है। इस बीच में यह सिलसिला छत्तीसगढ़ में भी शुरु हो चुका है।

हमारी पार्टी मुस्लिम सामाजिक संगठनों सहित तमाम अल्पसंख्यक सामाजिक संगठनों, मानवाधिकार संगठनों, प्रगतिशील–जनवादी ताकतों एवं मीडिया कर्मियों से अपील करती है कि वे हर्राकोडेर झूठी मुठभेड़ की स्वतंत्र जांच करें एवं सच्चाई को जनता के सामने लावें तथा मारे गये मुस्लिम व्यक्ति का पता लगावें। इस संदर्भ में हमारी ओर से यह ऐलान करना लाजिमी होगा कि मारा गया मुस्लिम व्यक्ति न ही संघर्ष इलाके का था और न ही उनसे हमारा कोई ताल्लूक था। इस संबंध में हमारी जांच भी जारी है।

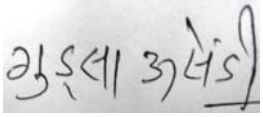

(गुड्सा उसेण्डी)

प्रवक्ता,

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)